Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

समकालीन महिला उपन्यासकारों में ममता कालिया का रचनात्मक अवदान

विवेक कुमार [1*], प्रो. आनन्द कुमार सिंह [2]

[1] शोध छात्र, हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

[2] विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

Corresponding Author: * विवेक कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22704621

सारांश

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में महिला रचनाकारों ने स्त्री जीवन, उसकी आकांक्षाओं, संघर्षों और सामाजिक स्थिति को अभिव्यक्ति देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस परंपरा में ममता कालिया का नाम विशिष्ट रचनात्मक पहचान के साथ सामने आता है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ, पारिवारिक संबंधों, स्त्री-पुरुष संबंधों, आर्थिक दबावों महानगरीय जीवन तथा बदलती सामाजिक संरचना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

ममता कालिया का साहित्य केवल स्त्री-केंद्रित समस्याओं तक सीमित नहीं है। उनके यहाँ पुरुष मनोविज्ञान, पारिवारिक मूल्य, आर्थिक संघर्ष, रोजगार, व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा, उपभोक्तावादी संस्कृति और आधुनिक जीवन की जटिलताएँ भी पर्याप्त महत्त्व रखती हैं। यही व्यापक दृष्टि उनके कथा-साहित्य को समकालीन हिंदी साहित्य में अलग पहचान प्रदान करती है। मूल आलेख भी उनके साहित्य में स्त्री और पुरुष दोनों के मनोविज्ञान तथा सामाजिक यथार्थ के चित्रण को रेखांकित करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 03-08-2026
- **Accepted:** 07-09-2026
- **Published:** 11-09-2026
- **MRR:**4(9); 2026: 132-135
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमार वि, सिंह आ. कु. समकालीन महिला उपन्यासकारों में ममता कालिया का रचनात्मक अवदान. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(9):132-135.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

शब्द कुंजी: ममता कालिया, महिला उपन्यासकार, स्त्री-विमर्श, मध्यवर्ग, महानगरीय जीवन, भूमंडलीकरण, उपभोक्तावाद, मानवीय संवेदना।

© 2026 विवेक कुमार, प्रो. आनन्द कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यास का विकास भारतीय समाज में होने वाले सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ निरंतर हुआ है। विशेष रूप से स्वतंत्रता के बाद हिंदी साहित्य में महिला रचनाकारों की सक्रियता बढ़ी और उन्होंने स्त्री जीवन के अनेक अनछुए पक्षों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, शिवानी, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, चित्रा मुद्गल, अलका सरावगी आदि रचनाकारों ने हिंदी उपन्यास को नई संवेदना और दृष्टि प्रदान की। मूल शोध-पत्र में भी इन महिला उपन्यासकारों की व्यापक उपस्थिति और समकालीन सामाजिक परिवेश के चित्रण को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

इसी साहित्यिक परिदृश्य में ममता कालिया का रचनात्मक व्यक्तित्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। उनका साहित्य जीवन के निकट दिखाई देता है। उन्होंने अपने आसपास के सामाजिक परिवेश, मध्यवर्गीय परिवारों, स्त्री-पुरुष संबंधों तथा बदलते हुए महानगरीय जीवन को अपने कथा-साहित्य का आधार बनाया। उनकी रचनाओं में अनुभव की प्रामाणिकता और यथार्थ की तीक्ष्ण पहचान दिखाई देती है।

ममता कालिया के साहित्य की विशेषता यह है कि वे सामाजिक समस्याओं को केवल बाहरी दृष्टि से नहीं देखतीं, बल्कि पात्रों की मानसिक स्थितियों और उनके अंतर्द्वंद्वों को भी अभिव्यक्ति देती हैं। इस कारण उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ के साथ मनोवैज्ञानिक यथार्थ का भी प्रभावशाली समन्वय दिखाई देता है।

ममता कालिया का रचनात्मक व्यक्तित्व

ममता कालिया का जन्म २ नवंबर १९४० को मथुरा, उत्तर प्रदेश में हुआ। उन्होंने हिंदी साहित्य को कहानी और उपन्यास के माध्यम से समृद्ध किया। उपलब्ध मूल आलेख के अनुसार उन्होंने अनेक कहानी-संग्रहों तथा उपन्यासों की रचना की है। उनके चर्चित कहानी-संग्रहों में छुटकारा, सीट नंबर छह, प्रतिदिन, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, बोलने वाली औरत, मुखौटा, निर्मोही, पच्चीस साल की लड़की, थिएटर रोड के कौवे, काके दी हड्डी, खुशकिस्मत, पाँच बेहतरीन कहानियाँ, थोड़ा सा प्रगतिशील, प्रतिनिधि कहानियाँ, दसक, मेरी प्रिय कहानियाँ तथा दो गज की दूरी आदि का उल्लेख मिलता है।

उनके उपन्यासों में बेघर, नरक दर नरक, प्रेमकहानी, लड़कियाँ, एक पत्नी के नोट्स, दौड़, अँधेरे का ताला, दुक्खम-सुक्खम तथा सपनों की होम डिलीवरी आदि प्रमुख हैं। इन रचनाओं में आधुनिक जीवन की अनेक समस्याएँ अलग-अलग संदर्भों में सामने आती हैं।

स्त्री जीवन और मनोवैज्ञानिक यथार्थ

ममता कालिया के उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषता स्त्री के मानसिक संसार का सूक्ष्म चित्रण है। उनकी स्त्री पात्र केवल परिस्थितियों की शिकार नहीं हैं। वे अपने अस्तित्व, स्वतंत्रता और निर्णयों को लेकर सजग भी दिखाई देती हैं।

उनकी रचनाओं में स्त्री के प्रेम, विवाह, काम, परिवार, आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़े प्रश्न उभरते हैं। लेखिका स्त्री के जीवन को किसी एक आदर्श की सीमा में बाँधने के बजाय उसके वास्तविक अनुभवों के साथ प्रस्तुत करती हैं।

उनका पहला उपन्यास बेघर 1971 में प्रकाशित हुआ। इसमें कौमार्य-भंग जैसे संवेदनशील और सामाजिक रूप से वर्जित विषय को कथानक का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया है। इस दृष्टि से यह उपन्यास अपने समय के सामाजिक नैतिक मानदंडों पर प्रश्न खड़ा करता है। मूल आलेख भी बेघर को इस दृष्टि से विशिष्ट मानता है कि इसमें कौमार्य संबंधी मिथकों को चुनौती दी गई है।

इस प्रकार ममता कालिया स्त्री की देह और उसके अनुभवों को केवल नैतिकता की कसौटी पर नहीं देखतीं, बल्कि उसे सामाजिक संरचना और पुरुषवादी मानसिकता के संदर्भ में समझने का प्रयास करती हैं।

मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ

ममता कालिया का कथा-साहित्य मुख्यतः मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताओं से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। मध्यवर्ग के आर्थिक संघर्ष, सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता, रोजगार की समस्या, पारिवारिक अपेक्षाएँ और आधुनिक जीवन की आकांक्षाएँ उनके पात्रों के जीवन में दिखाई देती हैं।

नरक दर नरक में युवा पीढ़ी की बेरोजगारी और आर्थिक संकट को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें मेहनत और संघर्ष के बावजूद आर्थिक असुरक्षा से जूझते व्यक्ति का जीवन सामने आता है। इस प्रकार उपन्यास केवल किसी एक पात्र की कहानी न रहकर व्यापक मध्यवर्गीय अनुभव का प्रतिनिधित्व करने लगता है।

ममता कालिया की यही विशेषता उन्हें सामाजिक यथार्थ से जोड़ती है। उनके पात्र असाधारण परिस्थितियों के नायक नहीं, बल्कि हमारे आसपास दिखाई देने वाले सामान्य मनुष्य हैं। यही सामान्यता उनके साहित्य को जीवन के अधिक निकट ले आती है।

प्रेम-विवाह और पारिवारिक संबंध

ममता कालिया के उपन्यासों में प्रेम और विवाह के प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण हैं। प्रेमकहानी में प्रेम-विवाह से जुड़ी समस्या तथा अस्पताल व्यवस्था में रोगियों के शोषण जैसे प्रसंगों को स्थान दिया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि लेखिका व्यक्तिगत संबंधों को व्यापक सामाजिक व्यवस्था से जोड़कर देखती हैं।

एक पत्नी के नोट्स में नौकरी करने वाली स्त्री के जीवन, परिवार और करियर के बीच संतुलन का प्रश्न उठता है। लेखिका के यहाँ परिवार केवल परंपरा का प्रतीक नहीं है, बल्कि मानवीय संबंधों की एक महत्त्वपूर्ण आधारभूमि है।

सपनों की होम डिलीवरी में भी पारिवारिक संबंधों को विशेष महत्त्व प्राप्त है। इस प्रकार ममता कालिया के यहाँ आधुनिकता और पारिवारिक जीवन के बीच संघर्ष के साथ--साथ उनके सह--अस्तित्व की संभावनाएँ भी दिखाई देती हैं।

महानगरीय जीवन और बदलता सामाजिक परिवेश

आधुनिक हिंदी साहित्य में महानगरीय जीवन एक महत्त्वपूर्ण विषय बनकर उभरा है। ममता कालिया ने महानगर की जीवन-शैली, उसकी प्रतिस्पर्धा, आर्थिक दबाव और सामाजिक संबंधों में आने वाले बदलावों को अपने साहित्य में स्थान दिया है।

उनके उपन्यासों में शहर केवल पृष्ठभूमि नहीं है, बल्कि वह पात्रों के जीवन और मानसिकता को प्रभावित करने वाली सक्रिय शक्ति के रूप में उपस्थित होता है। महानगरीय जीवन में व्यक्ति एक ओर स्वतंत्रता और अवसर प्राप्त करता है, तो दूसरी ओर अकेलेपन, तनाव और प्रतिस्पर्धा का सामना भी करता है। ममता कालिया के उपन्यासों

© 2026 विवेक कुमार, प्रो. आनन्द कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

में महानगर से जुड़े जनजीवन का चित्रण दिखाई देता है, जबकि समकालीन महिला उपन्यासकारों के साहित्य में गाँव, कस्बे और शहर सभी सामाजिक परिवेशों का चित्रण मिलता है।

भूमंडलीकरण-व्यवसाय और उपभोक्तावादी संस्कृति

ममता कालिया के साहित्य की समकालीनता का एक महत्त्वपूर्ण आधार भूमंडलीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति से संबंधित समस्याओं का चित्रण है।

दौड़ उपन्यास में भूमंडलीकरण, व्यावसायिकता, आजीविका, विज्ञापन तथा उपभोक्तावादी जीवन-दृष्टि से संबंधित समस्याओं को कथानक का हिस्सा बनाया गया है। इन बाहरी परिस्थितियों के साथ व्यक्ति की निजी समस्याएँ भी उपन्यास में अभिव्यक्त होती हैं।

इस प्रकार लेखिका आधुनिक बाजार व्यवस्था को केवल आर्थिक परिवर्तन के रूप में नहीं देखतीं, बल्कि उसके प्रभावों को मानवीय संबंधों और व्यक्ति के जीवन-मूल्यों के संदर्भ में भी समझती हैं।

शिक्षा-जगत और स्त्री की भूमिका

अँधेरे का ताला में शिक्षा-जगत, महाविद्यालयीन वातावरण, अध्यापिकाओं, विद्यार्थियों और अन्य कर्मचारियों के जीवन का चित्रण मिलता है। शिक्षा को ज्ञान और चेतना के विकास का माध्यम माना गया है। मूल आलेख में निराला की पंक्तियों के संदर्भ से ज्ञान को अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करने वाली शक्ति के रूप में देखा गया है।

इस उपन्यास के माध्यम से ममता कालिया शिक्षा-संस्थानों की आंतरिक संरचना तथा वहाँ कार्यरत स्त्री-पुरुषों की सामाजिक स्थितियों को सामने लाती हैं। इससे उनके साहित्य की विषय-विस्तार क्षमता का परिचय मिलता है।

स्त्री-विमर्श और पारिवारिक मूल्य

ममता कालिया के साहित्य में स्त्री-विमर्श के स्वर स्पष्ट रूप से मौजूद हैं, लेकिन उनका स्त्री-विमर्श परिवार-विरोधी दृष्टिकोण पर आधारित नहीं है। वे स्त्री की स्वतंत्रता और सम्मान की पक्षधर होते हुए भी परिवार को सामाजिक जीवन की महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में स्वीकार करती हैं।

उनकी स्त्री पात्र अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और आवश्यकता पड़ने पर विरोध भी करती हैं। साथ ही वे परिवार और संबंधों के महत्त्व को भी समझती हैं। मूल आलेख में यह निष्कर्ष सामने आता है कि ममता कालिया के अनुसार परिवार की रचना स्त्री और पुरुष दोनों की सहभागिता से संभव है।

यही संतुलित दृष्टिकोण उनके स्त्री-विमर्श को अन्य लेखिकाओं से अलग पहचान प्रदान करता है।

लड़कियाँ और आधुनिक स्त्री जीवन

लड़कियाँ एक लघु उपन्यास है, जिसमें फिल्मी दुनिया और मॉडलिंग से जुड़े जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। इसमें अविवाहित युवतियों के संघर्ष, आकांक्षाओं और विवशताओं का चित्रण मिलता है।

इस रचना के माध्यम से ममता कालिया आधुनिक शहरी संस्कृति के उस पक्ष को सामने लाती हैं जहाँ आकर्षक जीवन की चमक के पीछे असुरक्षा व संघर्ष और सामाजिक दबाव छिपे होते हैं। इस प्रकार बाहरी आधुनिकता और आंतरिक जीवन-संघर्ष के बीच का अंतर स्पष्ट होता है।

तीन पीढ़ियों का सामाजिक यथार्थ

दुक्खम-सुक्खम में तीन पीढ़ियों की स्त्रियों के जीवन और उनकी समस्याओं को अभिव्यक्ति दी गई है। इसके माध्यम से सामाजिक परिवर्तन, पारिवारिक संरचना और स्त्री की बदलती भूमिका को समझा जा सकता है।

तीन पीढ़ियों के जीवन को एक साथ देखने पर स्पष्ट होता है कि समय के साथ स्त्री की सामाजिक स्थिति, उसकी आकांक्षाएँ और उसके निर्णय लेने की क्षमता में परिवर्तन आया है। ममता कालिया इस परिवर्तन को किसी कृत्रिम वैचारिक आग्रह के साथ नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं।

ममता कालिया की भाषा एवं शिल्प

ममता कालिया की भाषा सहज, स्वाभाविक और जीवन के निकट है। उनकी रचनाओं में अनावश्यक शब्दाडंबर नहीं मिलता। वे सामान्य जीवन में प्रयुक्त भाषा के माध्यम से पात्रों की मानसिकता और सामाजिक स्थिति को अभिव्यक्त करती हैं।

उनकी शैली में व्यंग्य, संवादात्मकता, सहजता और यथार्थपरकता का समन्वय दिखाई देता है। पात्रों के संवाद उनके व्यक्तित्व और सामाजिक परिवेश को समझने में सहायक होते हैं। महानगरीय जीवन, मध्यवर्गीय मानसिकता और बदलते पारिवारिक संबंधों को व्यक्त करने के लिए उनकी भाषा विशेष रूप से प्रभावी सिद्ध होती है।

उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह पाठक को कृत्रिम दूरी का अनुभव नहीं होने देती। पाठक को लगता है कि कथा में उपस्थित परिस्थितियाँ उसके अपने जीवन और आसपास के समाज से संबंधित हैं।

ममता कालिया का विशिष्ट स्थान

समकालीन महिला उपन्यासकारों की परंपरा में ममता कालिया का स्थान इसलिए विशिष्ट है कि उन्होंने स्त्री प्रश्नों के साथ-साथ समाज की व्यापक समस्याओं को भी अपने साहित्य में स्थान दिया। उनके साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध, परिवार, रोजगार, बेरोजगारी, आर्थिक दबाव, महानगरीय जीवन, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद जैसे अनेक प्रश्न एक साथ उपस्थित होते हैं।

उनके उपन्यासों में स्त्री-मनोविज्ञान के साथ पुरुष-मनोविज्ञान को भी

समझने का प्रयास मिलता है। यही व्यापक दृष्टि उन्हें केवल स्त्री-केंद्रित लेखिका के रूप में सीमित नहीं करती, बल्कि एक व्यापक सामाजिक यथार्थ की रचनाकार के रूप में स्थापित करती है।

निष्कर्ष

ममता कालिया समकालीन हिंदी साहित्य की ऐसी सशक्त रचनाकार हैं जिन्होंने अपने अनुभव और सामाजिक परिवेश को रचनात्मक संवेदना के साथ साहित्य में रूपांतरित किया है। उनके उपन्यासों में जीवन की वास्तविक समस्याएँ, मध्यवर्गीय संघर्ष, स्त्री की स्थिति,

© 2026 विवेक कुमार, प्रो. आनन्द कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

पारिवारिक संबंध, आर्थिक दबाव और महानगरीय संस्कृति के बदलते स्वरूप का सजीव चित्रण मिलता है।

उनकी रचनात्मक दृष्टि का महत्त्व इस बात में है कि वे स्त्री को केवल पीड़ित या संघर्षशील पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे निर्णय लेने वाली, प्रश्न करने वाली और अपनी पहचान निर्मित करने वाली मनुष्य के रूप में देखती हैं। साथ ही वे परिवार और सामाजिक संबंधों की उपयोगिता को भी स्वीकार करती हैं।

इस दृष्टि से ममता कालिया का साहित्य स्त्री-विमर्श और सामाजिक यथार्थ के बीच संतुलित संवाद स्थापित करता है। उनकी रचनाएँ अपने समय की सामाजिक विसंगतियों को उजागर करने के साथ--साथ बदलते हुए मानवीय मूल्यों की पड़ताल भी करती हैं। इसलिए समकालीन महिला उपन्यासकारों में ममता कालिया का स्थान विशिष्ट, महत्त्वपूर्ण और अग्रणी माना जा सकता है। मूल आलेख का निष्कर्ष भी उन्हें मौलिकता, अनुभूति और यथार्थपरक दृष्टि के आधार पर समकालीन महिला उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

संदर्भ-सूची

1. माधव नीरजा. हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास.
2. वर्मा अर्चना. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य.
3. कपूर बद्रीनाथ. प्रामाणिक हिंदी कोश.
4. बाहरी हरदेव. वृहद अंग्रेजी-हिंदी कोश.
5. कालिया ममता. भविष्य का स्त्री विमर्श. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2015.
6. बिजापुरे फेमिदा. ममता कालिया: व्यक्तित्व-कृतित्व. 2004.
7. बच्छाव दिलीप दौलत. 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास में नारी विमर्श. साहित्य संहिता. 2021;7(1).

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Corresponding Author

विवेक कुमार मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार के हिन्दी विभाग में शोध छात्र हैं। वे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में शोध एवं अकादमिक अध्ययन से जुड़े हुए हैं। उनका शैक्षणिक कार्य हिन्दी भाषा, साहित्य और साहित्यिक विमर्श के विभिन्न आयामों के अध्ययन पर केंद्रित है। वे शोध एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

© 2026 विवेक कुमार, प्रो. आनन्द कुमार सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/